ISSN: 0973-0583

गाँधीजी का सर्वोदयी दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विनीता

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, राँची

सारांश

जिस प्रकार मैं किसी स्थूल पदार्थ को अपने सामने देखता हूँ उसी प्रकार मुझे जगत् के मूल में राम राम के दर्शन होते है''। गाँधीजी का यह प्रसिद्ध कथन इस बात की अभिव्यक्ति है कि उन्होंने किसी विशेष दर्शन को अपने विचारधारा का आधार नहीं बनाया वरन् ईवर के प्रयोजन में अपनी आस्था व्यक्त की जो उनके विचारधारा का आधार बना जिसकी प्रार्सगिकता गाँधी दर्शन के रूप में है। जिसे विचार अर्थात् महात्मा गाँधी के राजनीति संबंधी विचारों के दिए गाँधीवादी राजनीतिक दर्शन गाँधीवादी राजनीतिक विचारधारा, गाँधीवादी आदि शब्दों से व्याख्यातित की जाती रही है। गाँधीजी ने अपने विचारों को नित्यप्रति की समस्याओं को समझाने के लिए अवसरों के अनुक्रम अपने विविध विचार समय-समय पर व्यक्त किए। समाज में विद्यमान परिस्थितियों पर यथा जाति-पाँति, ऊँच-नीच धर्म संप्रदाय पर आधारित भेदभाव, वर्ग-संघर्ष एवं महिलाओं की दुर्दशा पर जिसके कारण उनके विचारों में कहीं-कहीं विरोधाभास एवं असबद्धता भी मालूम पडती है। स्वयं गाँधीजी के शब्दों में ''लोग कहते हैं मेरे विचार बदल गए हैं और आज मैं वर्षों पूर्व कही बातों से भिन्न बातें कहता हूँ। सच्ची बातें यह है कि परिस्थितियाँ बदल गई है, मैं वहीं हूँ। मेरे शब्द व कार्य परिस्थितियों के अनुसार ही होते हैं। जिस वातावरण में मैं रह रहा हूँ उसका विकास होता रहा है और सत्याग्रही होने के कारण उसकी प्रतिक्रिया मेरे ऊपर भी होती रही है। अत: प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य गाँधी जी के सर्वोदय दर्शन का समग्र अध्ययन करना है एवं दर्शन की अपरिहार्यता को दर्शाता है। गाँधी जी के सर्वोदय दर्शन की प्रासंगिकता जीवन के समग्र क्षेत्र राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपरिहार्य एवं अतुलनीय है।

प्रस्तावना

'दर्शन' शब्द का सामान्यत: सीमित अर्थ देखना होता है अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए। वही विचारधारा किसी समाज में प्रचलित विचारों का संकलन कहा जा सकता है जिसके आधार पर किसी विशेष दृष्टिकोण द्वारा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनितिक संगठन की परिभाषा की गई हो। जैसे कि गाँधीवादी विचारधारा स्वयं गाँधीजी के शब्दों में ''गांधीवादी नाम की कोई वस्तु नहीं है और में अपने पीछे कोई संप्रदाय छोड़ना नहीं चाहता। मैं कभी इस बात का दावा नहीं करता कि मैंने कोई नया सिद्धांत चलाया है। मैंने मूल सत्यों को केवल अपने ढंग से अपने नित्यप्रति के जीवन और समस्याओं पर लागू करने की चेष्टा की है। आप इसे गाँधीवादी नाम से पुकारें। इसमें कोई वाद नहीं है।''

इस प्रकार से दर्शन एवं विचारधारा द्वारा किसी विशेष दृष्टिकोण के आधार पर वस्तु विशेष के संबंध में मनन एवं चिंतन की प्रक्रिया से निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जाता है। चूंकि ''दर्शन द्वारा विषयों को हम संक्षेप में दो वर्गों में रख सकते हैं। लौकिक और अलौकिक अथवा मानवी (सापेक्ष) और आध्यात्मिक (निरपेक्ष) बिना दर्शनों के आध्यात्मिक पवित्रता एवं उन्नयन होना दुर्लभ है।''

यही कारण है कि गाँधी दर्शन को गाँधीवादी विचारधारा का पर्याय माना जाता है, कारण यह है कि गाँधी जी के संपूर्ण विचारों का केन्द्र बिंदु आध्यात्मिक ही रहा है। यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो गाँधीजी की विचारधारा को प्रभावित करने वाले तत्त्वों में मुख्य रूप से उल्लेखनीय प्राचीन धर्म ग्रंथ है। पंतजलि के 'योग सूत्र' से लेकर रामायण, महाभारत, कुरान, बाइबिल, बौद्ध धार्मिक ग्रंथों आदि का प्रभाव गाँधी जी के विभिन्न विचारों पर स्पष्टत: परिलक्षित होता है। बाइबिल के एक अध्याय

सर्मन ऑन दी माउन्ट ही गाँधी जी द्वारा दी गई सत्याग्रह एवं अहिंसा के सिद्धांतों का आधार बना। अतः गाँधीवादी विचारधारा को गाँधीवादी दर्शन कहना उपयुक्त मालूम प्रतीत होता है।

''मैं ऐसे भारत के निर्माण का प्रयत्न करूँगा जिसमें निर्धन-से- निर्धन मनुष्य भी यह अनुभव करेगा कि यह मेरा अपना देश है, और इसके निर्माण में मेरा पूरा हाथ है। ''गाँधी जी के अनुसार एक ऐसी व्यवस्था जहाँ सभी लोग कंधा-से-कंधा मिलाकर राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान देते हों। परन्तु ऐसी व्यवस्था केवल तभी संभव हो सकती हैं। जब सत्ता के दुरूपयोग होने पर राष्ट्र के लोग सत्तारूढ़ के विरोध करने की क्षमता रखते हो।

सर्वोदय- 'सर्वे भवन्तु सुखनिः सर्वे सन्तु निरामयः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभाग भवेत' संस्कृत का यह मंत्र सर्वोदय के विचार की मूल भावना को स्पष्ट करता है। सामान्य शब्दों में सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ, 'सबका उदय, सबका विकास एवं सब प्रकार के उदय से है।' सर्वोदय के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने भिन्न -भिन्न विचार रखे।

राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि 1916 से चले गाँधी का सर्वोदय 1948 (गाँधी की हत्या) के बाद से तीन प्रकार से हो चुके हैं ये हैं-

"सरकारी गाँधीवादी,

मठी गाँधीवादी, और

कुजात गाँधीवादी''।

वहीं विनोबा भावे के अनुसार सर्वोदय सभी के उत्थान एवं सर्वशक्ति के साथ सर्वहित में चलने से है। एक ऐसा समाज जहाँ सभी के साथ समान व्यावहार हो अर्थात् ऐसा वर्गविहीन और शोषण मुक्त समाज जहाँ वर्ग, धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर किसी प्रकार का कोई बहिष्कार नहीं हो। इस प्रकार सर्वोदय शब्द से केवल मानव जाति के कल्याण करने का उद्देश्य स्पष्ट होता है। अर्थात् सर्वोदय कहता है ''तुम दूसरों को जिलाने के लिए जीओ।'' जहाँ तक गाँधीजी के दर्शन के संदर्भ में सर्वोदय के सिद्धांत की बात की जाए तो गांधीजी द्वारा व्याख्यायित सर्वोदय दर्शन का आधार रस्किन की पुस्तक 'अन टु दिस लास्ट पुस्तक' है। जिसकी स्पष्टता गाँधीजी द्वारा अपनी आत्मकथा में की गई है। गाँधीजी के शब्दों में ''जिस पुस्तक ने मेरे जीवन में क्रांतिकारी प्रभाव से परिवर्तन कर दिया हैं। वह रस्किन की अन टु दिस लास्ट है। मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्तर मन में बसी हुई थी उसका स्पष्ट प्रतिबिंब मैंने इस ग्रन्थ में देखा। इस कारण उसने मुझपर अपना सम्राज्य जमा लिया एवं अपने विचारों के अनुसार मुझसे आचरण करवाया। ''गाँधीजी के अनुसार रस्किन की किताब के द्वारा उन्होंने सर्वोदय के सिद्धांतों का अर्थ निम्न प्रकार से समझा :-

1 सबके भले में अपना भला है।

2 वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक-सी होनी चाहिए क्योंकि आजीविका का हक दोनों का एक सा है।

3 मजदूर का और किसान का अर्थात् परिश्रम का जीवन ही सच्चा जीवन होता है।

गाँधी जी के सर्वोदय वादी दर्शन को गाँधीवादी समाजवादी आदर्श के रूप में भी अभिव्यक्त किया जाता है। परन्तु इस आदर्श को प्राप्त कैसे किया जा सकता है यह एक विचारणीय प्रश्न था। जिस पर अन्य समाजवादी विचारधाराओं ने भी अपने-अपने तरीके से विचार रखे हैं। साम्यवाद व्यवस्था की प्राप्ति के लिए वर्गहीन समाज की कल्पना करती हैं एवं समाज के संपन्न वर्ग अर्थात् पूंजीपति वर्ग को समाप्त करने की बात करती है। साम्यवाद हिंसा के प्रयोग को भी सामाजिक परिवर्तन के लिए सही मानते हैं। परन्तु सर्वोदयी विचारधारा अपने आप में समग्र है जिसका उद्देश्य किसी एक वर्ग का उदय नहीं वरन् सबका उदय करना है।

जिसे विनोबा भावे द्वारा दिए गए वक्तव्य से स्पष्ट समझा जा सकता है। उनके शब्दों में :- ''कुछ लोगों का अथवा बहुत लोगों का या अधिकांश लोगों का उदय नहीं चाहता। हम अधिकतम के हित से संतुष्ट नहीं है। हम उँचे -नीचे, सबल- निर्बल, विद्वान व मूर्ख सभी के हित से ही संतुष्ट हो सकते हैं। सर्वोदय शब्द से इस उच्च तथा सर्वव्यापी भावना का बोध होता है।'' अर्थात् जो लोग संपन्न है उनका नैतिक उत्थान करना आवश्यक है एवं जो लोग गरीब-शोषित है तो उनके लिए जीवन की आधारभूत आवश्यकता रोटी, कपड़ा एवं मकान की पूर्ति ही नैतिकता आध्यात्मिक आदि सब कुछ है। इस तरह यह

विचारधारा सभी विचारधाराओं से भिन्न प्रतीत होती है। अन्य सभी विचारधारा सर्वोदय की प्राप्ति के लिए बाहरी दबाव को अपरिहार्य मानती है जबकि गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय दर्शन सर्वोदय की प्राप्ति द्वारा व्यक्ति की अन्त: प्रेरणा को बढ़ाती है। एक नैतिक दार्शनिक होने के कारण उनके विचारों का स्त्रोत सदैव ईश्वरीय चेतना से अभिभूत होता है। गाँधीजी द्वारा हमेशा साधनों की पवित्रता पर बल दिया जाता रहा है। उनके अनुसार उत्तम साध्य की प्राप्ति उत्तम साधनों द्वारा ही संभव है। उनके शब्दों में'' जैसे साधन होंगे वैसे ही साध्य होगा।'' अत: उन्होंने सर्वोदयवादी समाजवादी की स्थापना के लिए उन्होंने सत्य एवं अहिंसा के साधनों के प्रयोग को आधार बनाया। अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग में उन्होंने लिखा है ''मेरे निरंतर अनुभव ने मुझे विश्वास दिया है कि सत्य से अलग कोई ईश्वर नहीं है। सत्य की सिद्धि का एक मात्र उपाय अहिंसा हैं। अहिंसा की अखंड साधना से ही सत्य का पूर्ण साक्षात्कार होता है। 'गाँधी जी के अनुसार, ''किसी को कष्ट पहुँचाने का विचार या किसी का बुरा चाहना भी हिंसा है।'' जो सर्वोदय की प्राप्ति में भी बहुत बड़ी बाधा है। समाज के सारे आदर्श सद्गुण के सारे नियम गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के सिद्धांत में आ जाते हैं। यही कारण है गाँधी जी ने सत्य एवं अहिंसा को सर्वोदय के आदर्श की प्राप्ति के लिए अपरिहार्य मानते हैं। क्योंकि केवल सत्य और अहिंसा के नियम को व्यवहार में धारण करने के पश्चात् ही लोग एक दूसरे के कल्याण के लिए कार्य करने में सक्षम हो सकते हैं जिससें सर्वोदय की मूल भावना को प्राप्त किया जा सकता है। सत्य व अहिंसा के सिद्धांतों के अतिरिक्त गाँधी जी द्वारा सर्वोदय दर्शन की आधारशिला रखने के लिए निम्न तत्वों पर बल दिया गया जो इस प्रकार है:-

विकेन्द्रीकरण शासन:

व्यवस्था, कार्यों, शक्तियों एवं सत्ता को केंद्रीय स्थान से हटाकर पुन: विभाजित करने की प्रक्रिया से है। गाँधीजी के अनुसार, ''लोकतंत्र का अर्थ इस तंत्र में नीचे से नीचे तथा ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढकर संपूर्ण समाज का समझकर उसका उपयोग समाज की उन्नति एवं कल्याण के लिए करें। इसके अतिरिक्त सर्वोदय दर्शन के प्रमुख तत्व निम्न है:-

1 पारिश्रमिक की समानता

2 प्रतियोगिता का अभाव

3 साधन शुद्धि

4 इद्रिय परिग्रह

5 भूदान आंदोलन

6 राज्य का क्षय

7 व्यक्ति एवं सृष्टि संबंध

8 अध्यात्म एवं योग की साधना।

अत: स्पष्ट है कि गाँधीजी का सर्वोदयी दर्शन अत्यन्त समग्र एवं विश्वव्यापी है।

इस प्रकार हिन्दू मुस्लिम एकता, छुआछूत, विरोधी संघर्ष के अतिरिक्ति स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को सुधारना गाँधीजी का मुख्य लक्ष्य रहा था। शिक्षा- व्यवस्था गाँधीजी के शिक्षा संबंधी दर्शन की अभिव्यक्ति व्यक्ति के आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं शारीरिक पहलुओं से स्पष्ट होती है जिसका आधार 3H Head Hand Heart है। उद्देश्य तात्कालिक एवं दूरगामी होना चाहिए। तात्कालिक उद्देश्य से तात्पर्य रोजगार, स्वतंत्रता एवं सांस्कृतिक उत्थान से संबंधित माना जा सकता है। दूरगामी लक्ष्य का आधार जीवन के नैतिक उत्थान से संबंधित रहा जिसके द्वारा आत्मचेतना, सत्य का ज्ञान हासिल करना होगा। गाँधीजी के शिक्षा संबंधी विचार में नैतिकता की अभिव्यक्ति होती है। अर्थात् शिक्षा एवं दर्शन साथ-साथ चलता है। भारत की शिक्षा-व्यवस्था में गाँधी जी के शिक्षा संबंधी दर्शन को विभिन्न नामों जैसे वर्धा शिक्षा योजना, नयी तालीम, बुनियादी शिक्षा, बेसिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है। जिसके अनुसार स्कूली बच्चे कक्षा-एक-से ही तकली से सूत कातते थे, रूई से पौनी बनाते थे और सूत की गुड़िया बनाकर खादी भंडारो को देते थे। शिक्षा के संबंध में उनका विचार व्यावसायिक था एवं शिक्षा को रोजगार परक एवं अल्पव्ययी बनाने को था। इसके साथ ही गाँधी जी वर्त्तमान शिक्षा-व्यवस्था के दोषों को बताते हुए शिक्षा प्रणाली को ''विगलित'' कहा, अर्थात् देश में स्कूल शिक्षा का अभाव आदि के कारण स्त्रियों, गाँवों, कस्बों के बच्चों को शिक्षा का अभाव का कारण बताया है।

अत: गाँधीजी द्वारा वर्णित शिक्षा दर्शन के उद्देश्य इस प्रकार है :-

1 जीवाकोपार्जन का उद्देश्य

2 सांस्कृतिक उद्देश्य

3 पूर्ण विकास का उद्देश्य

4 नैतिक अथवा चारित्रिक विकास

5 मुक्ति का उद्देश्य ।

ये सभी बुनियादी शिक्षा के माध्यम से संभव हो सकती है। विशेषताएँ निम्न प्रकार है :-

1. 7 से 14 वर्ष तक के बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देना।
2. बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम की अवधि 7 वर्ष है।
3. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए, हिन्दी भाषा की अनिवार्यता होनी चाहिए।
4. शिल्पकारी की शिक्षा देनी चाहिए।
5. शारीरिक श्रम के शिक्षा द्वारा जीविकोपार्जन के उपयुक्त बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
6. बालक एवं बालिकाओं का समान पाठ्यक्रम होना चाहिए।
7. बालिकाएँ छठीं व सातवीं कक्षाओं में शिल्प के स्थान पर गृह विज्ञान ले सकती है।
8. पाठ्यक्रम का स्तर वर्तमान मैट्रिक के समकक्ष है।
9. पाठ्यक्रम में अंग्रेजी और धर्म की शिक्षा नहीं देनी चाहिए।

शोध पत्र का उद्देश्य गाँधी दर्शन का समग्र अध्ययन करना है एवं महिलाओं की स्थितियों में सुधार के लिए गाँधीजी के विचार अर्थात दर्शन की अपरिहार्यता को दर्शाना है। गाँधी जी के सर्वोदयी दर्शन की प्रासांगिकता जीवन के समग्र क्षेत्र राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपरिहार्य एवं अतुलनीय है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत पत्र द्वारा गाँधी दर्शन से संबंधित सर्वोदय जैसी अवधारणा के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि एक नैतिक दार्शनिक होने के नाते गाँधीजी का संपूर्ण दर्शन मानवता के नैतिक उत्थान पर केंद्रित है। जिसके द्वारा राष्ट्र सेवा करने का प्रयास किया जाता रहा है। वहीं महिला की स्थितियों में सुधार के लिए गाँधी जी द्वारा स्त्रियों को शिाक्षित एवं स्ववलंबी करने की अनिवार्यता पर बल दिया गया, जिससे कि समाज में स्त्रियों की स्थिति सशक्त हो सकें। उनका मानना था कि केवल 'शिक्षा' के द्वारा ही वर्तमान स्थिति में सुधार संभव है जो कि वर्तमान में पूर्णत: प्रांसगिक प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. नारायण इकबाल, आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ, जयपुर,, श्रीमति नारायण 2001।
2. गावा.ओ. पी., राजनीति-विचारक- विश्वकोष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2005,
3. चंद्र विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ग्लोरियस प्रिंटर्स दिल्ली, 2019
4. तिवारी रीता,'महात्मा गाँधी की'स्वराज'की अवधारणा', पीअर रीभ्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल अक्टूबर 2015
5. देसाई महादेव हरिभाऊ उपाध्याय, सक्षिप्त आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1955
6. शर्मा कुमकुम, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का स्वरूप, रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लनरी।
7. अग्रवाल जे0 सी0: स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास अर्थ बुक डिपो, 302 नाई बाल करोल बाग, नई दिल्ली।
8. चौबे, एस0 पी0- भारत और पश्चिम के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, तुलनात्मक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
9. चौबे हीरालाल, बेसिक शिक्षा, जन कल्याण प्रकाशन, कलकत्ता।
10. दूबे, रमाकान्त, विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री।
11. नागर, डॉ0 पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन
12. पाण्डेय, रामसकल-शिक्षा दर्शन, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री।
13. बाला, बाजपेयी शुक्ला-शिक्षा के दार्शनिक तथा समाज शास्त्रीय आधार
14. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन
15. लाल, बसन्त कुमार, समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, जवाहर नगर, दिल्ली, 1995

❖❖❖